ST. LAWRENCE HIGH SCHOOL

A JESUIT CHRISTIAN MINORITY INSTITUTION

CLASS: 12

पाठ्य सामग्री

SUBJECT :Hindi DATE: 25. 06 .2020

पाठ नाम - समय के ढेर पर

मैं विवश बंधा हूँ

इस सारे परिवेश से

मेरी निरंतर लड़ाई है

काल और देश से

कंकाल चेहरे वाले

चारों तरफ

डायल ही डायल है

हड्डियों की टक-टक

संदर्भ - प्रस्तुत पंक्तियाँ गिरिजाकुमार माथुर जी द्वारा रचित समय के ढेर पर कविता से ली गई है |

प्रसंग- अपनी इस परिस्थिति के लिए कवि उस परिवेश को दोषी मानता है,जिसमें वह पला-बढ़ा है |

व्याख्या - निम्न पंक्तियों के जरिए कवि अपने जीवन के मूल्यवान समय के यूँ ही बीत जाने के लिए सारा आरोप उन परिस्थितियों पर मढ़ता है, जिसमें उसकी परवरिश हुई है | वह इससे बंधा हुआ महसूस करता है | वह व्याकुल है ,अपनी इस परिस्थिति को बदलने के लिए | इसलिए उसकी लड़ाई निरंतर देश और काल के साथ चल रही है | वह उन पीड़ित और दुखी चेहरों को बदलने का आकांक्षी है, जो कंकाल की भाति होकर घड़ी के डायल के जैसे दिखते है और उनके हड्डियों की आवाज़ मानो सुई के टक- टक जैसी सुनाई पड़ती है | इस अवस्था के लिए कहीं -न कहीं वह परिस्थिति भी जिम्मेदार है,जो उसे गलत के विरुद्ध लड़ना नहीं सीखाती | मनुष्य धीरे-धीरे उसका आदी बनता जाता है, और अपने को समय के आगे विवश समझने लगता है |

और मैंने अपने आसपास

एक मनमानी अनंतता रोप ली है

काल की धारा छिपाकर

एक टूटती देह में कैद की है|

संदर्भ - प्रस्तुत पंक्तियाँ गिरिजाकुमार माथुर जी द्वारा रचित समय के ढेर पर कविता से ली गई है |

प्रसंग- इन पंक्तियों के जरिए आशावादी बने रहने की प्रेरणा कवि ने व्यक्त की है|

व्याख्या - अब तक कवि ने जिस निराशा और हताशा की बात कही , कवि उससे बाहर निकलकर आशावादी दृष्टिकोण अपनाता है | कवि ने देश, काल की सीमा से बाहर निकलकर समय के प्रवाह को अपने अन्दर कैद कर लिया है | वह अनंत समय तक इस वक्त को रोके रहना चाहता है ,जिससे वह हर उस पल को जी सके,जिसे उसने यूँ ही व्यर्थ में गवां दिया था | जीवन में कितने ही दुख का समय आए, मनुष्य को सदैव ही उस कठिन समय का सामना करना चाहिए और अपने अन्दर आशा की किरण को हमेशा जगाए रखना चाहिए |

संक्षिप्त उत्तरीय प्रश्न :

1. कवि को किससे डर लगता है और क्यों ? (1+2=3)

उ. कवि को तेज घड़ी की आवाज़ से डर लगता है | घड़ी की चलती सुई मानो कवि से कह रही हो कि उनके जीवन का समय कम होता जा रहा है | उनका जीवन व्यर्थ में ही बीता जा रहा है |

2. **मेरी निरंतर लड़ाई है (1+1+1=3)**

काल और देश से

i) 'मेरी' से कौन संकेतित है ?

ii) कविता का नाम लिखे ?

iii) गिरिजाकुमार माथुर किस काल के कवि है ?

उ.i) 'मेरी' से स्वयं कवि की ओर संकेत किया गया है |

ii) कविता का नाम समय के ढेर पर है |

iii) गिरिजाकुमार माथुर प्रयोगवाद काल के कवि है |

3. व्यर्थ गया है जीवन (1+1+1=3)

i) किसका जीवन व्यर्थ गया है ?

ii कवि का जीवन व्यर्थ क्यों गया ?

iii) कवि का नाम लिखे |

उ.i) कवि का जीवन व्यर्थ गया है |

ii) कवि अनुसार उन्होंने अपने जीवन में कोई सफलता हासिल नहीं की, और न ही अपने समय को किसी उचित कार्य को करने में ही उपयोग किया | इसलिए कवि अपने जीवन को व्यर्थ मानते है |

iii) कवि का नाम गिरिजाकुमार माथुर है |

शब्दार्थ :

विवश- मजबूर

परिवेश- वातावरण

काल- समय

अनंतता- असीम

असमर्थ- अक्षम

सन्नाटा- चुप्पी , मौन

उम्र- आयु

निरंतर- हर एक पल

डायल- घड़ी का गोलाकार भाग जिसपर समय की इकाइयाँ अंकित होती है

मनमानी- मनमाफिक

NAME-PRITI TIWARI